महाराष्ट्र
जैन वार्ता
NEWS
Manikchand
PRAKASH R DHARIWAL
Presents
The Legends of Maharashtra - II
2

शिक्षा-सेवा की समर्पित सारथी

सुषमाजी चोरडिया

ICONS of JAIN SAMAJ

शिक्षा केवल अक्षरों का ज्ञान नहीं, बल्कि संस्कारों का सिंचन और समाज को समर्थ बनाने का सशक्त माध्यम है। इसी विचार को जीवन का ध्येय बनाने वाली सूर्यदत्त एजुकेशन फाउंडेशन की उपाध्यक्ष एवं सचिव सुषमा संजय चोरडिया आज हजारों विद्यार्थियों और महिलाओं के लिए प्रेरणा का स्रोत बन चुकी हैं। एक संयुक्त परिवार की जिम्मेदार गृहिणी से लेकर वैश्विक स्तर पर पहचान बनाने वाले शैक्षणिक समूह की मार्गदर्शक बनने तक की उनकी यात्रा समर्पण, अनुशासन, मातृत्व और सेवा-भाव से बुनी हुई एक प्रेरणादायी कहानी है।

10 मई 1985 को डॉ. संजय बी. चोरडिया के साथ विवाह के पश्चात सुषमा जी का जीवन शिक्षा और समाजसेवा के उद्देश्य से गहराई से जुड़ गया। संयुक्त परिवार के संस्कारों में पली-बढ़ी सुषमा जी ने बचपन से ही जिम्मेदारी, अनुशासन और पारिवारिक मूल्यों को अपने जीवन का आधार बनाया। जब डॉ. संजय चोरडिया ने उद्योग जगत से शिक्षा क्षेत्र की ओर कदम बढ़ाया, तब सुषमा जी ने भी पूरे समर्पण के साथ इस संकल्प में उनका साथ दिया। प्रारंभिक वर्षों में उन्होंने परिवार और संस्था दोनों की जिम्मेदारियों को अत्यंत संतुलन के साथ निभाया। एक ओर छोटे बच्चों और सास-ससुर की देखभाल, तो दूसरी ओर तेजी से विकसित हो रही संस्था की प्रशासनिक चुनौतियाँ—इन सबका कुशल प्रबंधन उन्होंने धैर्य और संयम से किया। वर्ष 1999 में एक छोटे से बीज के रूप में स्थापित सूर्यदत्त एजुकेशन फाउंडेशन (SEF) आज एक विशाल वटवृक्ष का रूप ले चुका है, जिसकी शाखाएँ देश-विदेश तक फैल चुकी हैं। इस विकास यात्रा के पीछे डॉ. संजय बी. चोरडिया की दूरदर्शी सोच और सुषमा जी का सूक्ष्म प्रबंधन महत्वपूर्ण आधार रहा है। संस्था के संचालन में सुषमा जी ने केवल प्रशासनिक भूमिका ही नहीं निभाई, बल्कि विद्यार्थियों के लिए मातृत्व का भाव भी प्रदान किया। विद्यार्थियों और अभिभावकों के बीच यह विश्वास बना कि सूर्यदत्त केवल एक शैक्षणिक संस्था नहीं, बल्कि एक सुरक्षित और संस्कारयुक्त परिवार है। अनेक अभिभावक अपनी बेटियों को यहाँ शिक्षा के लिए भेजते समय विश्वास के साथ कहते हैं—"हम अपनी बेटी आपको सौंप रहे हैं।" यह विश्वास सुषमा जी द्वारा निर्मित स्नेहपूर्ण और सुरक्षित वातावरण का प्रमाण है। डॉ. संजय बी. चोरडिया के नेतृत्व और सुषमा जी के प्रशासनिक कौशल के समन्वय से सूर्यदत्त आज 'केजी से पीजी' तक की संपूर्ण शिक्षा प्रदान करने वाला एकीकृत शैक्षणिक केंद्र बन चुका है। संस्था ने शिक्षा के पारंपरिक और आधुनिक दोनों क्षेत्रों में उल्लेखनीय उपलब्धियाँ प्राप्त की हैं। CBSE स्कूल और जूनियर कॉलेज के माध्यम से मजबूत बुनियादी शिक्षा प्रदान करने के साथ-साथ मैनेजमेंट, टेक्नोलॉजी, साइबर सिक्योरिटी और विधि जैसे करियर-उन्मुख पाठ्यक्रमों में भी संस्था ने अपनी विशिष्ट पहचान बनाई है। स्वास्थ्य क्षेत्र में फार्मेसी, फिजियोथेरेपी और नर्सिंग जैसे पाठ्यक्रमों के माध्यम से संस्था समाज को कुशल चिकित्सा कर्मी उपलब्ध करा रही है। वहीं होटल मैनेजमेंट, फैशन डिजाइनिंग और इंटीरियर डिजाइन जैसे रचनात्मक क्षेत्रों में भी यहाँ के विद्यार्थियों ने राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी प्रतिभा का परिचय दिया है। सूर्यदत्त की शिक्षा गुणवत्ता का ही परिणाम है कि आज इसके अनेक विद्यार्थी विश्व के विभिन्न देशों में प्रतिष्ठित पदों पर कार्यरत हैं। विशेष रूप से लंदन में ही सूर्यदत्त के 200 से अधिक पूर्व छात्र (Alumni) अपनी प्रतिभा और कौशल का प्रदर्शन कर रहे हैं। यह उपलब्धि संस्था की वैश्विक साख और पिछले ढाई दशकों से युवाओं को सशक्त भविष्य देने के चोरडिया परिवार के संकल्प को दर्शाती है। शिक्षा के साथ-साथ सुषमा जी का विशेष ध्यान महिला सशक्तिकरण पर भी रहा है। उनका मानना है कि यदि एक महिला सशक्त बनती है तो पूरा परिवार और समाज सशक्त होता है। इसी विचार के साथ उन्होंने सूर्यदत्त विमेन एम्पावरमेंट एंड लीडरशिप एकेडमी (SWELA) की स्थापना की, जिसका उद्देश्य महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाना और उन्हें नेतृत्व की दिशा में आगे बढ़ाना है। SWELA के माध्यम से महिलाओं के लिए अनेक व्यावहारिक प्रशिक्षण कार्यक्रम संचालित किए जा रहे हैं। ग्रामीण और शहरी महिलाओं को फैशन डिजाइनिंग और क्विल्ट मेकिंग का प्रशिक्षण देकर उन्हें स्वरोजगार से जोड़ा जाता है। पाककला और बेकरी उद्यमिता के अंतर्गत महिलाओं को कमर्शियल बेकरी तथा मिलेट्स आधारित हेल्थ-फूड बनाने का प्रशिक्षण दिया जाता है, जिससे वे होम-बेकर्स के रूप में अपना व्यवसाय शुरू कर सकें। डिजिटल साक्षरता कार्यक्रमों के माध्यम से महिलाओं को सोशल मीडिया मार्केटिंग और ई-कॉमर्स की जानकारी देकर उनके उत्पादों को ऑनलाइन बाजार से जोड़ा जा रहा है। स्वास्थ्य सेवा प्रशिक्षण के अंतर्गत असिस्टेंट नर्सिंग, योग और वेलनेस जैसे पाठ्यक्रमों के माध्यम से महिलाओं को रोजगार के अवसर भी उपलब्ध कराए जा रहे हैं। सामाजिक सरोकारों के प्रति सुषमा जी की प्रतिबद्धता भी उल्लेखनीय है। ग्रामीण महिलाओं को सिलाई मशीनें उपलब्ध कराकर उन्हें स्वरोजगार के लिए प्रोत्साहित करना हो या कोविड-19 महामारी के समय लोगों की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के लिए 'इम्युनिटी लड्डू' और आयुर्वेदिक चाय मसाले का वितरण करना—हर पहल में उनका सेवा भाव स्पष्ट दिखाई देता है। उनके इसी समर्पण और सामाजिक नेतृत्व के लिए उन्हें 'एशियन मोस्ट प्रॉमिसिंग सोशल चेंज मेकर', 'सावित्री-ज्योति पुरस्कार' और 'इंटरनेशनल दीपस्तंभ अवार्ड 2025' जैसे प्रतिष्ठित सम्मानों से सम्मानित किया जा चुका है। चोरडिया परिवार की अगली पीढ़ी भी इस शिक्षा और सेवा यात्रा को आगे बढ़ाने में सक्रिय है। उनकी बड़ी बेटी स्नेहल नवलखा संस्था के प्रबंधन कार्यों में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं, जबकि दूसरी बेटी डॉ. किमया गांधी चिकित्सा क्षेत्र में अपनी सेवाएँ दे रही हैं। वहीं पुत्र सिद्धांत चोरडिया प्रबंधन शिक्षा के क्षेत्र में नए आयाम स्थापित करने के लिए कार्यरत हैं। परिवार का लक्ष्य आने वाले पाँच से दस वर्षों के भीतर एक स्वतंत्र और विश्वस्तरीय विश्वविद्यालय की स्थापना करना है। सुषमा संजय चोरडिया की जीवन यात्रा यह संदेश देती है कि यदि किसी व्यक्ति के मन में सेवा का सच्चा भाव और समाज के लिए कुछ करने का संकल्प हो, तो वह न केवल एक सफल संस्था खड़ी कर सकता है, बल्कि हजारों लोगों के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन भी ला सकता है। शिक्षा के माध्यम से समाज को सशक्त और संस्कारित बनाने का उनका यह प्रयास आने वाली पीढ़ियों के लिए एक प्रेरणादायी उदाहरण बना रहेगा।